Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

लोक साहित्य एवं लोक संगीत

Dr. Prem Lal

Assistant Professor Music, Govt.Degree College Arki, Solan, HP

सार संक्षेपिका

लोक साहित्य सर्वदेषीय, सर्वकालीन और सर्वसम्मत माना गया है, इसकी परम्पराऐं मिटती नहीं बल्कि गत्यात्मक रहती है और सदैव आगे बढ़ती रहती है, इसलिए लोक–साहित्य को गतिषील एवं ऐतिहासिक विज्ञान माना जाता है। लोक–साहित्य सर्व–साधारण की वह मौखिक एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, जिसमें किसी भी अभ्यास एवं अध्ययन की अपेक्षा नहीं। यह तो बहुत सरल, सहज और स्वाभाविक वृतियों का निरूपण है, यह लोक जीवन की सहज भावाभिव्यक्ति है। लोक–साहित्य की अभिव्यक्ति की बात की जाए तो इसकी अभिव्यक्ति का एक मात्र सषक्त माध्यम केवल लोक संगीत व लोक गीत हैं। लोक गीत लोक–साहित्य को सूरत रूप प्रदान करते हैं। लोक–साहित्य के अंतर्गत लोक गीतों का उल्लेख सर्वप्रथम किया जाता हैं। गीत भावुक और संवेदनषील मानव के हृदय के स्वभाविक उदगार के रूप में प्रकट होते है। लोक गीतों में समस्त चराचर गाता व झूमता है, ये वे गीत है जो आधुनिकता की चकाचौंध से परे पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परागत रूप से प्रवाहमान है, इसके रचियता अज्ञात है और ये एक बहती नदी की धाराओं की तरह चीरकाल से आगे बढतें रहते है। इस प्रकार यदि लोक–साहित्य की विधाओं पर दृश्टिपात किया जाये तो विभिन्न प्रान्तों में गाये जाने वाले लोक गीत लोक–साहित्य की अभिव्यक्ति का एक मात्र सषक्त माध्यम है।

बीज शब्दः गत्यात्मक, भावाभिव्यक्ति,, अभिव्यक्ति, उदगार, रचियता, तन्मय, स्वछंदतापूर्वक, दृष्टिपात।

भूमिका

किसी देश की संस्कृति का परिचय उस देश के लोक साहित्य से प्राप्त हो जाता है। लोक साहित्य समाज की आत्मा का उज्जवल प्रतिबिम्ब है। किसी देष की जातीय, राश्ट्रीय, साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं आर्थिक मापदंड के लिए अगर कोई पैमाना हमारे पास है, तो वह उस देश का लोक साहित्य ही हैं। लोक–साहित्य दो षब्दों 'लोक' और 'साहित्य' से मिलकर बना हैं। लोक साहित्य को जानने से पहले हमें लोक षब्द को जानना आवष्यक है।

लोक शब्द का अर्थ

वैसे तो 'लोक' षब्द का अर्थ अपने आप में व्यापक विस्तार लिए हुए है, परन्तु प्रस्तुत संदर्भ में किसी भी जन–समूह में स्थापित परम्परागत जीवन मूल्यों के प्रति आस्थावान सामान्य समुदाय को लोक की संज्ञा दी जा सकती है। इसे आम तौर पर ग्राम्य परिवेष के साथ जोड़ा जाता है, जो इसे संकुचित अर्थों मे परिभाशित करता है। जबकि सही मायने में लोक के अंतर्गत गांवों से दूर रहने वाला वो जन मानस भी है, जो परंपरा व आदिम विष्वासों के बधन से मुक्त नहीं।

लोक षब्द के विशय में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है ''लोक षब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं बल्कि नगरों व गांवों में फैली हुई समूची जनता है, जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं हैं ये लोग नगर में परिश्कृत, रूचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन में

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अभ्यस्त होते है, जो परिश्कृत रूचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकूमारिता को जीवित रखने के लिये जो वस्तुऐं आवष्यक होती है उनको उत्पन्न करतें हैं। '' (डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोक साहित्य का अध्ययन 'जनपद' पत्रिका अंक 3, पृष्ठ 65–66)

लोक का अर्थ सर्व–साधारण जनता से संबंध रखने वाला भी है, जिसे सर्वहारा वर्ग के रूप में गांव व षहर में देखा जा सकता है, जो श्रम की बुनियाद पर अपने जीवन की इमारत को खड़ी करने की कोषिष करता है। कहने का तात्पर्य है कि लोक षब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। एक ओर यह सारे संसार और समाज का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरी ओर अनपढ़, अषिक्षित, असभ्य और सभ्यता के प्रभाव से दूर अपनी मूल परम्पराओं में रहता हुआ साधारण जनता का बोध कराता हैं। सही मायने में लोक की पहचान उसकी संस्कृति से होती है। जो इसका रचियता भी है और उसका संवाहक भी है।

लोक साहित्य अर्थ एवं स्वरूप

लोक षब्द के समान ही लोक साहित्य के लिऐ भी अनेक पर्यायों का प्रचलन है लोक साहित्य षब्द को अंग्रेजी के 'फोकलिटरेचर' का अनुवाद माना जाता है। इस षब्द के लिए लोक–वार्ता का प्रयोग भी मिलता है त्रिलोचन पांडये जी के अनुसार '' लोक–वार्ता समस्त आचार–विचारों की वह अभिव्यक्ति होती है जिसमें मानव मात्र के भावों एवं संस्कृति का परम्परित रूप प्रत्यक्ष होता'', (लोक–साहित्य का अघ्ययन, पृश्ठ 20)। कहने का अभिप्राय यह है की यही समाज अपने जीवन के अनुभव को अपने विवके के आधार पर विविध कलात्मक रूपों में अभियक्त करता है तो वे लोकसाहित्य या कला द्वारा अभिचिन्हित किये जाते हैं।

लोक साहित्य के विशय में श्री राम षर्मा जी ने लिखा है कि ''संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य में 'साहित्य' और 'लिटरेचर' दोनों काव्य के अर्थ में प्रस्तुत होते थे। लेकिन अब समस्त लिपिबद्ध अभिव्यक्ति को साहित्य और लिटरेचर कहा जाने लगा। वस्तुतः लिपि का साहित्य से अविच्छेद संबन्ध नहीं हैं, क्योंकि बिना लिपि का सहारा लिऐ भी कोई रचना साहित्य की कोटि में आ जाती हैं। 'वेद' भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में लिपिबद्ध न थे परन्तु उनके विशय में ये प्रष्न कभी उठा ही नहीं कि वे साहित्य है की नहीं। (श्रीराम षर्मा–लोकसाहित्य का सामाजिक, सांस्कृतिक अध्ययन, पृश्ठ 34।)

लोक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है। साधारण जनता का गाना, हंसना, खेलना, रोना इत्यादि जिन षब्दों में अभिव्यक्त हो सकता है, वह सब कुछ लोक–साहित्य परिधि में आ जाता है। लोक साहित्य को न किसी ने सजाया–संवारा है और न ही उसे कभी लेखनी की ही सहायता प्राप्त हुई। आरंभ से ही यह समाज के कंठ से ध्वनित होता रहा हैं। समाज में प्रचलित मान्यताऐ परिवर्तित हुई, संस्कृति और सभ्यता समयानुसार बदलती रही, साहित्य विकास के साथ अपनी अभिव्यक्ति षैली तथा विचार पद्धति के अनुकूल बदलता गया, लेकिन लोक साहित्य अपने मूल–स्वरूप को लिए हुए सामूहिक लोक भावना की धरा को अविरल रूप में प्रवाहित करता रहा व पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता रहा।

लोक साहित्य की परिभाषाएं

लोक साहित्य के विशय में विद्वानों द्वारा दी गई कुछ परिभाशाऐं इस प्रकार से हैः–

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

(क) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ''लोक साहित्य का सीधा संबंध लोकमानस से है। वाणी के द्वारा प्रकृत रूप में लोक मानस की सरल, निश्छल एवं अकृत्रिम अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य है''(सम्पादक हिंदी साहित्य कोश, पृश्ठ–682)।

(ख) डॉ. संतराम अनिल '' सर्व– साधारण समाज की वह मौखिक एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति जिसकी रचना में अभ्यास और अध्ययन की अपेक्षा नहीं होती, जिससे करता का व्यक्तित्व साधारण कृत हो जाता है और जिसमें आदिम मानस के कुछ अवषेश विद्यमान हो और जिसे एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती चली जाए लोक साहित्य कहलाता है '',(कन्नौजी लोक साहित्य, पृश्ठ 25)।

(ग) सत्यव्रत सिन्हा ''लोक साहित्य वह लोक रंजनी साहित्य है जो सर्व साधरण समाज की मौखिक रूप में भावमय अभिव्यक्ति करता है। ''(भोजपुरी लोक साहित्य पृश्ठ–1)

उपरोक्त परिभाशाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि लोक साहित्य सर्व–साधारण लोक समाज की वह मौखिक एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति होती है, जिसमें किसी भी अभ्यास एवं अध्ययन की अपेक्षा नही और जिसमें आदिम मानव के कुछ अवषेश विद्यमान रहते है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी पारम्परिक रूप से चलते रहते है। समाज का वास्ततिक चित्र लोक साहित्य में दृश्टिगोचर होता है, लोक गीतों, लोक गाथाओं, लोक कथाओं और लोक नाटयो से इन लोक रंजक कला परम्पराओं से मनुश्यों के रहन–सहन, आचार–विचार, खान–पान और रीती–रीवाजों की जानकारी प्राप्त होती हैं। इस प्रकार समाज का चित्रण हमें लोक साहित्य में मिलता हैं। इसकी सबसे बड़ी विषेशता यह है कि यह अधिकांषतः मौखिक है। यह मौखिक रूप से ही पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। लोग अपने सुख–दुःख, राग–विराग, जीवन–मरण से संबंधित समस्त भावानाओं को एक दूसरे के साथ जिस रूप में बांटतें है, उसे लोक साहित्य का ही हिस्सा माना जाता है।

लोक साहित्य का वर्गीकरण

लोक साहित्य लोक जीवन की सहज भावाभिव्यक्ति है। अतः उसमें लोक–हर्शोल्लास, हास–परिहास, विशाद–पीड़ा, सुख–दुःख, जय–पराजय, ज्ञान–विज्ञान, चिंतन–मनन सभी कुछ अभिव्यक्ति पाता है। इन सभी स्थितियों और मनोदषाओं को वाणी देने के लिऐ जिन विधाओं को अपनाया जाता है, उन्हें लोक साहित्य के भेद कहा जाता है। डॉ.कृश्ण देव उपाध्याय ने लोक साहित्य (हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास) को 5 भागों में विभक्त किया हैः–

(क) लोक गीत (ख) लोक गाथा (ग) लोक कथा (घ) लोक नाटय (ड.) लोक सुभाशित (लोक सुभाशित के अंतर्गत कहावतें, कहानियां, सूक्तियां, पहेलियां इत्यादि आते हैं)

लोक गीत

लोक–साहित्य की अभिव्यक्ति की बात की जाऐ तो इसकी अभिव्यक्ति का एक मात्र सषक्त माध्यम केवल लोक संगीत व लोक गीत है। लोक गीत लोक–साहित्य को मूरत रूप प्रदान करते हैं। लोक–साहित्य के अंतर्गत लोक गीत का उल्लेख सर्वप्रथम किया जाता हैं। गीत भावुक और संवेदनषील मानव के हृदय के स्वभाविक उदगार के रूप में प्रकट होते हैं। लोक गीत ते गीत है जिनका प्रधान तत्व गेयता है। गीत वस्तुतः रागात्मक अभिव्यक्ति है जिनमें जीवन का राग प्रकट होते है। मानव की आदिम प्रवृतियॉ (प्रेम,वात्सल्य, करूणा, हास्य)एक समान होने के कारण ही सभी प्रान्तों और जातियों के गीतों में समानता देखी जा सकती है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

लोक गीतों में समस्त चराचर गाता व झूमता है, ये वे गीत है जो आधुनिकता की चकाचौंध से परे पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परागत रूप से प्रवाह मान है, इसके रचयिता अज्ञात है और ये एक बहती नदी की धाराओं की तरह चीरकाल से आगे बढ़ते रहते हैं। जीवन से जुड़ी हुई स्थितियां जब लोक गीतों के माध्यम से फूट पड़ती है, तो वे अनायास ही रस की वर्शा करने लगती हैं। सरल षब्दावली प्रत्येक के समझ में आ जाती है, जो अपने अर्थ से श्रोवाओं को तन्मय कर देती हैं। इनके षब्दों का अर्थ विषाल होता हैं। अलग–अलग अवसरों के अलग–अलग गीत अपनी अलग षब्दावली और सरल षब्दावली के कारण इन्सान की आत्मा से जुड़ जाते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीत इतनी स्वंछदतापूर्वक प्रकट होते है की मनुश्य अपने समाज और अपनी मिटटी से अनायास ही जुड़ जाता हैं। अतः व्यक्ति और समाज का प्रतिबिम्ब लोक संगीत है, यह कहना कोई अतिष्योक्ति नहीं।

लोक गीतों का अर्थ एवं परिभाषा

लोक गीत, 'लोक' और 'गीत' दो षब्दों का योग है जिसका अर्थ है जोक के गीत। लोक षब्द वास्तव में अग्रेंजी के फोक का पर्याय है, जो नगर तथा ग्राम की समस्त साधारण जन का द्योतक है। पाष्चात्य विद्वनों ने 'फोक' शब्द से तात्पर्य, परम्पराओं में स्वाभाविक जीवन बसर करने वाले जन मानस से लिया गया है। 'गीत' षब्द,लोक गीत षब्द का दूसरा भाग माना गया है। सामान्य भाशा में गीत वह गेय पद्य है, जिसकी विषेश धुन हो तथा जिसे स्वर बद्ध करके गाया जा सके। गीत षब्द का अर्थ स्वयं ही स्पश्ट है, गेय पद सस्वर पद गीत कहलाता है। 'लोक गीत' षब्द के मुख्यतः तीन अर्थ मिलते हैः–लोक में प्रचलित गीत, लोक निर्मित गीत व लोक विशयक गीत।

लोक गीत अज्ञात व्यक्तियों द्वारा की गई जन–मानस के सहज एवं सरल मनोभावों तथा विचारों की सरलतम एवं संगीतात्मक मौखिक अभिव्यक्ति है। जन मानस का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जो लोक गीतों में किसी न किसी रूप में विद्यमान न रहता हो।

लोक गीतों का उदभव एवं विकास

लोक गीतों का उदभव उतना ही प्राचीन है जितना मानव जीवन। आदियुग से जब मानव गुफाओं और जंगलों में रहता था तो वह प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए समूह में रहता था। जब उसमें बुद्धि का विकास हुआ होगा तो सम्भवतः उसने अपनी भावनाओं को लयात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया होगा, वही आदि गीत लोक गीत कहलाया। मानवीय ज्ञान के अनन्त भण्डार, इतिहास के अनेक पृश्ठों को उलटफेर करने पर भी लोक गीतों के सृजन की तिथि को खोजना संभव नहीं है। क्योंकि लोक गीतों को किसी काल विषेश की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। क्योंकि मानव हृदय जब कभी भी सहानुभूति से प्रेरित दुखों, संवेदनाओं से आंदोलित हुआ होगा, गीतों के अज्ञात स्वर मनुश्य के अधरों पर गूंज उठे होगें। आनंद की भावना से मानव जीवन सर्वदा ही पोशित होता रहा है। अतः आनंद भावना को मानव जीवन के विकास की प्रमुख प्रवृति ही माना जायेगा। इसकी मूल प्रेरणा मानव हृदय की रसात्मक अनुभूति ही रही, इस अनुभूति का उदय वेलन हृदय, संकुचित सीमा में न समाकर जब वाणी, मुखरित होने की स्थिति मे पंहुच जाती है, तभी लोक गीतों का स्रोत उमड़ पड़ता है।

लोक गीत न तो कभी लिपिबद्ध हुए थे न इनके रचियताओं की गेयता ही स्पश्ट है। अतः मौखिक परम्परा से उपजी ऐसी कलात्मक रचनाओं का रचना काल ढूंढना अथवा इनके मूल रचियताओं की खोज करना कठिन ही

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

नही अपितु असंभव भी हैं। इन लोक गीतों का उदगम स्थान जहां मानव हृदय रहा है, वहीं इन गीतों का विकास भी परम्परागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी होता रहा।

लोक गीतों का वर्गीकरण

भारतीय जन–मानस ने जन्म से लेकर मृत्यु तक विविध संस्कारो को अपनी लयपूर्ण संगीतात्मक, सहज भावनाओं के साथ उत्सव एवं समायोजन के रूप में सजाया है। प्रत्येक आंचल की अपनी परम्परा से जुड़े गीत, तीज–त्यौहार, विवाह संस्कार तथा अनेक अवसरों पर गाऐ जाने वाले लोक गीत आज भी भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि हैं। षिषु जन्म से लेकर मनुश्य की अंत्येश्ठी तक के समूचे चित्र हमारे लोक गीतों में विद्यमान है। भारत देष के हर एक प्रान्त में अपने–अपने संस्कारों से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के लोक गीत प्रचलित है। अपनी स्थानीय भाशा के अनुसार उन्हें अलग–अलग नामों से संबोधित करते है। जन–जीवन में लोक गीत की व्यापकता एवं प्रचुरता के आधार पर इन लोक गीतों का विभाजन निम्नलिखित पांच प्रकार के किया गया हैः–

(1) संस्कारों की दृष्टि से

जन्म से पूर्व से लेकर मृत्यु के बाद तक हिन्दू जीवन विभिन्न संस्कारों से सम्बद्ध है। हमारे धर्म षास्त्रियों ने शोड्स (सोलह) संस्कारों का विधान बताया है। जिसमें गर्भाधान, गोपुंस, पुत्रजन्म, मुंडन, यज्ञोंपवित विवाह और मृत्यु ये संस्कार प्रधान है। इनमें से गर्भाधान को छोड़ कर अन्य सभी संस्कारों की प्रथा आज भी भारतदेष में भिन्न–भिन्न नामों से प्रचलित है जिनमें सोहर मुंडन, जनेऊ, विवाह से सम्बंधित गीत लगभग सभी भारतीय बोलियों में थोड़े अन्तर के साथ गाए जाते है। अपने क्षेत्रीय रीति–रिवाजों के अनुरूप विवाह संस्कार के अंतर्गत वर और कन्या पक्ष में अलग–अलग प्रकार के गीत मिलते हैं। जैसेः– षगुन, भैया गीत, तिलक, बटणा गीत, हल्दी मेंहदी आदि वहीं बेटे के विवाह में बन्ना, सेहरा, घोड़ी, इत्यादि हर एक क्षण के गीत हमारे इन जन्म से लेकर विवाह यहां तक की मृत्यु संस्कार से सम्बन्धित गीतों का प्रचुर भंडार हमारे लोक जीवन में मिलता है। विभिन्न संस्कारों से संबन्धित ये गीत इस श्रेणी के अंतर्गत आते है।

(2) ऋतुओं तथा व्रतों के कम से

ऋतुओं के आधार पर रचे गए लोक गीतों में सावन ऋतु में कजली, हिंडोला, बसंत ऋतु में होली, बारहमासा, चैत्र आदि ऋतुओं में श्रृंगार और रोमांस की अभिव्यक्ति सहज ही देखी जा सकती है। श्रृंगार की मादकता, मदमस्तता, प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलम्ब पाकर स्वतः ही इन गीतों के रूप में अभिव्यक्त हो जाती है। वहीं विभिन्न प्रकार के व्रतों के अवसर पर स्त्रियां विभिन्न गीत गाकर अपने श्रद्धा भाव की अभिव्यक्ति करती हैं। जिनमें भगवान षिव व श्रीकृश्ण से संबधित धार्मिक गीतों के साथ–साथ श्रावण षुक्ल पंचमी जिसे नाग पंचमी के नाम से जाना जाता है, बिहार के मिथिला प्रान्त के नवविवाहितों के लिये यह विषेश पर्व होता है। यह पन्द्रह दिनों तक चलता है इसमें नाग देवता से संबंधित लोक गीत गाये जाते है। हिमाचल की बात करें तो षिवरात्रि, कृश्ण जन्माश्टमी, गुग्गा ज़हर पीर आदि देव से संबंधित गीत जो गाए जाते हैं वे इस श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

(3) लोक गाथाओं के आधार परः

इन लोक गीतों में वीरत्व व्यंजक लोकगाथाएं प्रेम प्रधान, पौराणिक एवं भक्ति परक लोक गाथाओं का गायन किया जाता है। इन गाथाओं का गायन अपनी स्थानीय बोली में ही किया जाता है। इन लोक गाथाओं मे

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

छतीसगढ़ की लोक गाथा राजा भर्तहरि से संबंधित भरथरी, राजस्थान में रासो, हिमाचल में गुग्गा गीत व लोक रामायण आदि तथा भारत वर्श के अनेक वीर राजा–महाराजाओं की वीरता की गाथाओं का गुण–गान जिन लोक गाथा गीतों के रूप में किया जाता है वे सब इसके अंतर्गत आते है।

(4) विभिन्न जातियों के गीतों के आधार पर

जाति विषेश के लोगों के द्वारा गाए जाने वाले गीतों को इस श्रेंणी में रखा जाता है, हिन्दू समाज का कोई कोना ऐसा नहीं जहां जाति प्रथा का दखल न हो। लोक गीतों में भी जातिगत भेद पाए जाते हैं, बिहरा अहेर, अहीर जाति के लोगाों का राश्ट्रीय गीत है। गोदो में गोदाऊ गीत गाया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न जातियों के अपने–अपने गीत है, जो उनकी आजीविका का भी एक मात्र साधन है। वे इसे अपनी ही संपति मानते है। इन गीतों में जैसे घाढ़ी भोया, हिमाचल में महिना गीत, बारहमासा गीत आदि षामिल है जिन पर इन जातियों का विषेश अधिकार है। ये गीत इसी श्रेणी में आते है।

(5) श्रम गीतों के आधार पर

भारतवर्श में बहुत से लोक गीत ऐसे है, जिनका प्रयोग लोग कार्य करते समय या कार्य करने के उपरांत अपनी थकान मिटाने हेतु नृत्य सहित करते है, खेतों में धान रोपते समय स्त्रियों जो गीत गाती है उन्हें रोपनी के गीत कहते है, हिमाचल में घास की कटाई करते समय जो गीत गाती है उन्हें गंगी कहते है, मक्की की गुड़ाई करते समय जो गीत गाते है उसे झुरी व गुड़ाई गीत कहते है, नौका चलाते बख्त मल्लाहों द्वारा मल्लाह गीत, इत्यादि गाए जाते है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो गीत कार्य करते समय गाए जाते है, उन्हें इस श्रेणी में रखा जाता है यथा इन गीतों को गा कर वे अपने जीवन को एक नई ऊर्जा व दिषा प्रदान करते है।

निष्कर्ष

वैदिक काल से चली आ रही गीतो की यह परम्परा आज तक वाचिक परम्परा के रूप में लोक समाज में विद्यमान है। लोक गीतों की परम्परा जीवन की सच्चाई खोजने की परम्परा है, जो न जाने कितने युगों से चली आ रही है और न जाने कितने हजारों युगो तक जाएगी। आज आधुनिकता की दौड़ में लोक साहित्य परम्परा की इस अमूल्य निधि को खो जाने का डर है, इसमें कोई षक नहीं की मषीनी युग ने लोक साहित्य विषेशतः लोक गीतों की रचना को गहरा धक्का पंहुचाया है। अतः इस अमूल्य सांस्कृतिक विरासत को आने वाली नई पीढ़ी को हमें संजोकर रखना है व आज के युवाओं को इन लोक कला परम्पराओं को सीखना चाहिए जिससे आने वाली पीढ़ी को हम लाभान्वित कर सकें।

संदर्भ

(1) अनिल डॉ.संत राम, कन्नौजी लोक साहित्य, पृष्ठ 25
(2) उपाध्याय डॉ. कृश्ण देव, हिंदी साहित्य का वृहद इतिहास,पृष्ठ 25
(3) द्विवेदी हजारी प्रसाद,लोक साहित्य का अध्ययन, जनपद पत्रिका अंक–65–65
(4) वर्मा डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, संपादक हिंदी साहित्य कोश, पृष्ठ 1
(5) षर्मा श्री राम, लोक साहित्य का सामाजिक, सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ 34
(6) सिन्हा सत्य व्रत, भोजपुरी लोक साहित्य, पृष्ठ 1
(7) त्रिलोचन पाण्डेय, लोक–साहित्य का अध्ययन, पृष्ठ 20